ओ३म्

**‘वेद वा आर्यसमाज का प्रचार और देहरादून पुस्तक मेला’**

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून। (PUSTAKMELADEHRADUN 28 9 15)

देहरादून भारत का एक प्रसिद्ध नगर है। यहां पहले भी उनके बार पुस्तक मेले लगे हैं और इस बार यहां नगर के ही अन्दर सबसे बड़े मैदान परेड ग्राउण्ड में 12 से 20 सितम्बर, 2015 तक नैशनल बुक ट्रस्ट की ओर से पुस्तक मेला लगा। इस मेले में देश के प्रमुख पुस्तक प्रकाशकों सहित साहित्य के वितरक एवं प्रचारकों के भव्य स्टाल लगे। प्रमुख स्थानीय दैनिक समाचार पत्रों के माध्यम से मेले का घर घर प्रचार भी हुआ। देहरादून शिक्षा की दृष्टि से देश का महत्वपूर्ण स्थान है। यहां हर विषय के छोटे बड़े प्रसिद्ध शिक्षा संस्थान, विद्यालय व महाविद्यालय हैं। लोगों को अपनी अपनी रूचि के अनुसार पुस्तकों को पढ़ने का शौक भी है। अतः जब इस प्रकार के मेलों का आयोजन होता है तो स्वाभाविक रूप से पुस्तक प्रेमी यहां आते हैं। हमें भी इस मेले की जानकारी आर्यजगत के विख्यात विद्वान डा. विवेक आर्य जी के दूरभाष से हुई। उन्होंने मेले से कुछ दिन पहले बताया कि **‘दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली’** की ओर से आर्य साहित्य के प्रचारार्थ एक स्टाल लगाया जा रहा है। हम भी इसमें सम्मिलित हों और जो सहयोग कर सकते हों, वह करें। यहां यह बता दें कि इससे पूर्व हमारा पुस्तक मेलों का कोई अनुभव नहीं था। हमने पुस्तक मेले देखे अवश्य थे, परन्तु एक बार जाकर पुस्तकें देख कर लौट आते थे और अपनी पसन्द की आर्यसमाज से सम्बन्धित कुछ पुस्तकें ले आया करते थे। हमें याद है कि लगभग 10 वर्ष पूर्व देहरादून के ऐसे ही एक पुस्तक मेले में हम गये थे। वहां आर्यसमाज साहित्य के प्रमुख प्रकाशक **‘विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली’** का स्टाल लगा हुआ था। हमने वहां से अपनी पसन्द की कुछ पुस्तकें ली थीं और आ गये थे। इससे अधिक हमने इस मेले का लाभ नहीं उठाया था।

इस बार डा. विवेक आर्य जी के शब्दों का हम पर प्रभाव हुआ और हम 12 सितम्बर, 2015 को मेले का शुभारम्भ होने के कुछ ही मिनटों बाद वहां पहुंच गये। हमारा पुस्तक स्टाल मुख्य द्वारा के बिल्कुल सामने था। पुस्तक स्टाल पर उपस्थित सभा स्टाल प्रभारी श्री रवि प्रकाश आर्य जी को अपना परिचय दिया और उनके निवास व भोजन आदि व्यवस्थाओं की जानकारी प्राप्त की। अन्य बातें हुईं और वहां कुछ घंटे व्यतीत किए। पहले ही दिन हमने वहां आगन्तुकों में उत्साह पाया और सभी स्टालों में उन्हें आते जाते देखा। हमारे स्टाल में भी आशा के अनुरूप व कुछ अधिक ही आगन्तुक देखने को मिले। हमारे स्टाल पर पहुंचने से पूर्व आर्यसमाज के दो व्यक्ति आ कर जा चुके थे। हमारे पहुंचने के कुछ समय बाद आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य आशीष दर्शनाचार्य, वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून वहां अन्य किसी स्टाल से निवृत्त होकर आ पहुंचे। उन्होंने बहुत सी पुस्तकें पसन्द कर उन्हें पैक करवा लिया। हम दोनों परस्पर परिचित हैं अतः हमने पुस्तक मेले, आर्य समाज के प्रचार व अपने लेखन कार्य आदि अनेक विषयों पर चर्चा की। अनेक सुझाव भी उन्होंने हमें दिये। यहां हम यह भी बता दें कि डा. विवेक आर्य जी का फोन आने पर हमने देहरादून जनपदीय उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून के मन्त्री इंजीनियर प्रेम प्रकाश शर्मा से सम्पर्क कर उन्हें जिले की सभी समाजों के अधिकारियों को पुस्तक मेले की जानकारी देने व सभी को सम्मिलित होने का अनुरोध करने का निवेदन किया था। देहरादून स्थित प्रसिद्ध श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरूकुल-पौंधा के प्राचार्य डा. धनंजय आर्य को भी मेले को सफल बनाने में अपने जिला स्तरीय प्रभाव का प्रयोग करने का निवेदन किया था। इन बन्धुओं ने हमें आशा के अनुरूप सहयोग दिया और स्वयं भी मेले में पहुंचे तथा स्टाल के प्रभारी श्री रवि प्रकाश को हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया। श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी ने यह भी किया कि वेद भाष्य समाप्त हो जाने पर हमारी प्रार्थना पर हमें वेद भाष्य के दो सैट प्रदान किये जिससे कि आगन्तुकों को इनका दर्शन कराया जा सके तथा अन्तिम दिन इच्छुक क्रेताओं को दिया जा सके। यह सूचित करते हुए भी प्रसन्नता होती है कि देहरादून के जिला व सैशन जज श्री बद्रीदत्त पालीवाल जी दो अलग अलग दिवसों में हमारे स्टाल पर आये। काफी समय तक रूके, महामृत्युजंय मंत्र पर विस्तार से चर्चा की और और यजुर्वेद का भाष्य भी क्रय किया। वेदों के महत्व व महर्षि दयानन्द के वेदों के पुनरुद्धार में योगदान के बारे में भी उन्हें संक्षेप में बताया। मेला आरम्भ होने से पूर्व आर्यसमाज लक्ष्मण चैक, देहरादून का वेद प्रचार सप्ताह चल रहा था। यह भी हुआ कि वहां सत्संग में उपस्थित बड़ी संख्या में आर्य बन्धुओं को भी मेले की सूचना देने के साथ उसमें भाग लेने का अनुरोध किया।

मेले के हमारे अनुभव सुखद व उत्साहवर्धक थे। हमने अनुभव किया कि जब भी कहीं पुस्तक मेला हो तो दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व अन्य आर्य प्रकाशकों व साहित्य विक्रेताओं को आर्थिक हानि लाभ का विचार किये बिना उसमें सहर्ष व उत्साह के साथ भाग लेना चाहिये। इससे वह लोग आर्य समाज के सम्पर्क में आ जाते हैं जो कि आर्यसमाज में नहीं आते। दूसरी बात हमने यह भी अनुभव की मेले में चारों वेद के भाष्य, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका व सन्ध्या-हवन की पुस्तकें बड़ी मात्रा में होनी चाहिये और इन पर प्रकाशित मूल्य पर अधिकतम् छूट दी जाये। छूट विषयक क्रेताओं को जानकारी स्टाल पर एक व अधिक आकर्षक बैनर प्रदर्शित कर देनी चाहिये जिससे कि स्टाल के सामने से गुजरने वाले व स्टाल में प्रवेश करने वाले पुस्तक प्रेमियों को इसकी जानकारी हो जाये। हमें यह भी आवश्यक लगता है कि सत्यार्थ प्रकाश के आरम्भ में ही यह जानकारी होनी चाहिये कि देश के किन-किन प्रमुख व्यक्तियों ने सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ा और उनकी इस पर क्या प्रतिक्रिया थी जिससे कि पुस्तक प्रेमी आकर्षित, पुस्तक के अध्ययन के लिए प्रेरित होे और उनमें पुस्तक के अध्ययन के प्रति उत्साह अन्त तक बना रहे। सत्यार्थ प्रकाश के आरम्भ में सत्यार्थ प्रकाश के पूरक महत्वपूर्ण ग्रन्थों की जानकारी भी होनी चाहिये जिससे पाठक उससे लाभ उठा सकें। नये पाठक को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने में क्या कठिनाईयां आ सकती हैंे, उसके बारे में भी आरम्भ में कुछ जानकारी दे दी जाये तो अच्छा हो। आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली के संस्थापक लाला दीपचन्द आर्य जी के जीवन में आता है कि एक बार उन्होंने दिल्ली में देखा की लोग सड़क के किनारे बड़ी संख्या में कुछ खरीद रहे हैं। उन्होंने पता किया तो ज्ञात हुआ कि वहां सस्ती पुस्तकें मिल रही थी। उन्होंने इससे प्रेरणा ली और कम मूल्य पर आर्यसमाज के साहित्य को आकर्षक, न्यनाभिराम व भव्य रूप में प्रकाशित कर उसे वितरित किया जो कि आर्यसमाज में एक कीर्तिमान है। सन् 1975 में हमने दिल्ली में उनसे भेंट की थी। इस अवसर पर उन्होंने आत्मीयता के साथ हमसे बातें की और हमें अपने अनुभव बताते हुए साहित्य प्रदान किया था। हम उन्हें जितना जान सके, उसके अनुसार वह हमें अपने हृदय की भावनाओं के अनुरूप व उसके बहुत निकट अनुभव होते हैं। देहरादून पुस्तक मेले में भी हमने देखा कि अनेक स्थानों पर हिन्दी व अंग्रेजी के उपन्यास **‘‘100 रूपये में कोई भी 3 उपन्यास”** के बैनर लटके थे और वहां क्रेताओं की बहुत भारी भीड़ थी। आर्य समाज को भी इससे शिक्षा लेनी चाहिये।

हम यह भी अनुभव करते हैं कि दिल्ली सभा जब भी दिल्ली से बाहर कहीं अपना स्टाल लगाये तो वहां के सभी आर्य समाजों की सूची प्राप्त कर उनके प्रधानों को 15 दिन से 1 माह पूर्व सूचित कर देवे और उन्हें प्रेरित करें कि वह सब तो वहां मेले में आयें ही, समाज के सभी सदस्यों व शुभचिन्तकों को भी मेले में आने की प्रेरणा करें। इससे भी आर्य समाज के साहित्य के प्रचार में लाभ मिल सकता है। देहरादून पुस्तक मेले में सभा ने श्री रवि प्रकाश आर्य को भेजा था। उन्हें आर्यसमाज के साहित्य के प्रचार का अच्छा ज्ञान है अपितु लगन भी है। उन्होंने लोगों को पुस्तकों के महत्व आदि के बारे में बहुत उत्तम जानकारियां दी। उनका यहां 9 दिनों तक किया गया तप सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। देहरादून आर्यसमाज के एक सदस्य श्री बृज मोहन ने श्री रविप्रकाश जी को अयाचित सक्रिय सहयोग दिया। वह प्रतिदिन आते थे और कई घण्टों तक स्टाल पर बैठकर श्री रविप्रकाश जी को सहयोग करते थे। रात्रि 8 बजे मेला समाप्त होने पर ही वह लगभग 2-3 किमी. दूरी पर स्थित अपने घर पैदल जाते थे। दो दिन हमें भी उन्हें स्कूटर से उनके घर छोड़ने का अवसर मिला। श्री बृजमोहन व इनके पिता से हमारे अच्छे सम्बन्ध रहे हैं। यह परिवार आर्यसमाज का दीवाना है परन्तु आर्यसमाज के नेताओं व अधिकारियों द्वारा उपेक्षित है। उनका सहयोग उनकी आर्यसमाज के प्रति गहरी भावनाओं का परिणाम था। सभा इस बात पर भी विचार कर सकती है कि यदि मेलों में एक के स्थान पर दो व्यक्तियों को भेजा जाये तो इससे एक व्यक्ति पर अधिक भार न पड़े क्योंकि नये स्थान पर अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कई स्थानों पर तो आर्यसमाज के लोग भी सहयोग नहीं करते।

आर्यसमाज के स्टाल पर अन्य आगन्तुक लोगों में आर्य भजनोपदेशक श्री सत्यपाल सरल, भजनोपदेशक श्री सन्दीप आर्य, श्री रामजी चतुर्वेदी, श्री राजेन्द्र काम्बोज अधिवक्ता, श्री ललित मोहन पाण्डेय, डीआरडीओ वैज्ञानिक श्री महेशचन्द शर्मा व वैज्ञानिक डा. विनीत कुमार प्रमुख आदि प्रमुख थे। मेले में आर्यसमाज का आशा से अधिक साहित्य विक्रय हुआ। आर्यसमाज के प्रचार की दृष्टि से यह मेला पूरी तरह से सफल रहा। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारियों को हम इस शुभ कार्य के लिए धन्यवाद करते हैं एवं उन्हें बधाई देते हैं।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**